अनुन्पन

13

पचेत्यरमंत्रम्हयच्वत्यरमेपरं॥यागितःसंख्योगानांसभवानात्रसंद्रायः॥२५॥ नृत्मद्कृत्याःसन्तंप्राप्तःसतंगितं॥योगितंप्रार्थयंतिह्जानिमे त्रबृद्धयः॥२६॥अहोम्द्राःसम्भित्रममंकालमंत्रमा ॥यन्विद्धःपरंदवं मास्वतंयंविद्द्धाः॥२०॥स्यमासादितासाक्षान्तद्राक्तिनेसिभिया॥ भक्तानुग्रहकृद्देवोयं ज्ञात्तामृतमभूतं॥२८॥देवासरम् नीनांत्यच्यद्धं स्वता॥यहायां निह्नंबम्दद्विज्ञेयं सुनेरिष्॥२९॥सण्यभगवानदेवःसवेकृत्यवं ॥सवीत्यास्त्रमभूतं॥२८॥देवदिता॥३०॥देदकृद्देश्यदेहिदक्ष्रत्देहिनांगितः॥प्राणकृत्राणभृत्याणिप्राणदःप्राणिनांगितः॥१॥अध्यास्यातिर्धानांध्यायिनामास्विद्दनां॥अपनर्भवकामानायागितःसायमिष्यरः॥३२॥अयंचसविभ्रतानांक्षभावक्षभगितप्रदः॥अयंचनन्ममरणविद्धास्यवं नेतुष्यातिर्वत्याम्यवं सिद्धान्तर्यातिर्वत्याम्यवं सिद्धान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यातिर्वत्यान्तर्यात्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यात्रस्वत्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यान्यान्तर्यान्तर्यान्यस्यान्तर्यान्तर्यान्तर्यस्यत्यस्यान्तर्यान्तर्

113011

ख्तेयामभूरित भंगितरेण निरूषितः ब्रन्हारीमैत्रवारवातुभिःतथाहिचवारिश्विति मैत्रीयाकेनयज्ञपरतयापतंजिल्लनाराव्यपरतयांगातमेनतरस्थेश्वरपरतयाच्यारवातः वस्तृतस्वध्यात्मपरीसीतिस्पर्छ॥६७॥अनेनसहंकारेण अत्रकाशिनाज्ञेन जङानृतरूषस्याय् स्पिचित्सद्रूपेणत्येवत्रकाराःसत्ताचभवतीतिभावः तथाचमेत्रवर्णः अयंरोचयर्ह्योहवाने। यंवास्यह्रुतेनपूर्वीरिति अयंरोचयत्त्रकारायित अहवःअत्रकाराव्यक्रहेकारादीन् हवानः स्विक्षकारामानः अयंभामापूर्वीः अहमारिस्ज्यानिविविद्येषवः एथक्विकित्ततयात्रः तेनस्वसत्तायायस्यत् आ-क्वार्यति अन्तरानयेताव्यसत्त्रयेवसत्तावतः करोतिर कारिवसर्पा देनिकित्रवेत्रपरानामथः॥३८॥१८॥१८॥

Digitized by Google